सुकरात (469–399 B.C.)

"मैं किसी को भी कुछ नहीं सिखा सकता हूँ।
मैं उन्हें सिर्फ सोचने के लिए प्रेरित कर सकता हूँ।"

-सुकरात

सुकरात यूनान के एक महान दर्शनिक थे। उन्हें पश्चिमी दर्शन का जनक भी कहा जाता है। सुकरात का जन्म 469 ईस्वी पूर्व एथेंस में हुआ था। सुकरात ने अपने जीवन के आरंभिक दिनों में पैतृक व्यवसाय (मूर्तिकला) को अपनाया किन्तु रूचि न होने के कारण उसे छोड दिया। उन्होंने मातृभाषा यूनानी कविता, गणित, ज्यामिति और खगोल विज्ञान की पढ़ाई की थी।

सुकरात के जीवनकाल में एथेंस में भारी राजनीतिक उथल पुथल मची हुई थी। देश को पेलोपोनेशियन युद्ध में भारी हार से अपमानित होना पडा था। इससे लोगों मे राष्ट्रीयता की भावना और वफादारी गहरा गई थी। परंतु सुकरात किसी संप्रदाय विशेष के पक्ष के खिलाफ थे और स्वयं को विश्व का नागरिक मानते थे।

महत्वपूर्ण वाद–विवादों को लेकर विभिन्न प्रकार के विषयों, युद्ध, राजनीति, विवाह, प्रेम, मित्रता, धर्म, विज्ञान, कला, कविता, नीति, और दर्शन में सुकरात की गम्भीर अभिरूचि थी। उनकी धन और ऐश्वर्य के प्रति कभी लालसा नहीं रही। वे सादा जीवन व्यतीत करते थे। लेकिन बौद्धिक दृष्टि से वे उच्च कोटि के विद्वान और वाकपटु थे।

सुकरात के पूर्व सोफीवाद अपनी पराकाष्ठा पर थी। सोफी मतावलम्बियों का कहना था कि कोई सार्वभौम सत्य नहीं है। सोफिस्टो ने ज्ञान और नैतिकता की व्यक्तिवादी परिभाषाएँ दी अतएव उनके अनुसार दोनों क्षेत्रों में सार्वभौमिकता प्राप्त करना असंभव है। सुकरात ने इन विचारों को स्वीकार नहीं किया और कहा कि लोगों मे वैचारिक भिन्नतायें मिलती है पर उनमें ऐसे तत्वों का अन्वेषण किया जाना चाहिए जिन पर हम सब एक मत हो सके। इस प्रकार विचार भिन्नताओं में भी एकता ढूँढना संभव है।

सुकराती पद्धति :

सुकराती पद्धति : सुकराती पद्धति के विभिन्न आयाम थे। वे अपनी प्रश्नात्मक निपुणता के लिए प्रसिद्ध थे। सुकरात लोगों के विचार किसी एक समस्या के सम्बन्ध में पूछते थे। उन्हें ध्यान से सुनकर विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछते थे और इसी प्रकार प्रश्नों के माध्यम से वे समस्या के पीछे निहित गहन तथ्यों तक पहुँचे थे। इस प्रकार सुकरात लोगों को सही विचार ग्रहण करने में सहायता ही नहीं करते थे अपतु उन्हें नवीन चिन्तन की ओर प्रोत्साहित भी करते थे।

सुकरात के अनुसार ज्ञान का सम्बंध विशेष तथा आकस्मिक से न होकर सामान्य तथा विलक्षण से है। उनके अनुसार सार्वभौम ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। उनकी दार्शनिक चिन्तन प्रक्रिया में निश्चित पद्धति के लक्षण मिलते है जो सभी ज्ञान और तथ्यों को एक सूत्र में जोड़ते तथा चिन्तन प्रक्रिया में साथ–साथ चलते है।

1. <u>संशय की पद्धति –</u>

सुकरात वाद विवाद के प्रत्येक विषय में अपनी अनाभिज्ञता व्यक्त करते थे। सुकरात का यह संशय प्रयोजनमय एवं अस्थाई था। वे अपने विवेचन को संदेह से प्रारंभ करते थे। परन्तु अन्त में उसका निवारण अपने विश्लेषण से करते थे। इस प्रकार सुकरात के लिए संदेह ज्ञान प्राप्ति के लिए साधन मात्र था।

2. संवादात्मक या वाद विवादात्मक :

मनुष्य में विचार भिन्नताएँ होते हुए भी उनमे ऐसी सामान्य बातों को ढूँढा जा सकता है जिस पर सब एकमत हो। प्रस्तुत विषय पर गम्भीर आलोचना एवं विचारों के आदान–प्रदान से एक स्पष्ट धारणा की स्थापना संभव है। संवादात्मक पद्धति द्वारा ज्ञान की रचना नहीं होती वरन अस्पष्ट एवं अविकसित ज्ञान को स्पष्ट एवं विशिष्ट बनाती है। पारस्परिक संवादों के द्वारा सत्यान्वेषण किया जा सकता है।

3. अवधारणत्मक एवं परिभाषात्मक :

पारस्परिक वाद–विवाद के दौरान धारणाओं का सृजन होता है और विभिन्न पदों जैसे न्याय, साहस, ईमानदारी दया की परिभाषाएँ निश्चित होती है। यद्यपि परिभाषाओं से ज्ञान के लिए आवश्यक है। यही परिभाषायें सार्वभौमिक ज्ञान की प्राप्ति का साधन है।

4. अनुभवात्मक या आगमनात्मक :

सुकरात वाद–विवादों में जो प्रश्न पूछते, उनका सीधा सम्बंध, दैनिक जीवन के अनुभवों से होता था। वे पहले समस्या से सम्बन्धित घटनाओं और तथ्यों को संकलित करते और उनपर विचार विमर्श करते। उनमें से सामान्य विशेषताओं वाले तथ्यों को पृथक कर लेते थे एवं विशेष तथ्यों के आधार पर वह सामान्य परिभाषाओं की परीक्षा व्यवहार एवं अनुभवों की कसौटी पर लेते थे।

5. नियमात्मक :

जो परिभाषाएँ बनाई जाती थी, उनके निष्कर्षों तथा परिणामों को घटाकर भी निरीक्षण किया जाता था। सामान्य की पुष्टि के लिए विशेष तथ्यों का होना आवश्यक समझा जाता था ताकि सामान्य परिभाषाओं या अवधारणाओं को निराधार तथा खोखला न किया जा सके।

सुकरात के मतानुसार पूर्ण सन्तोष के लिए किसी भी परिभाषा का आगमन एवं निगमन दोनों प्रकार से सत्यापन करना अति आवश्यक है।

दर्शन के इतिहास में सुकरात की पद्धति गवेषणात्मक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। अनेक विचारकों ने उनसे लाभ लिया। प्लेटों की द्वन्द्वात्मक पद्धति सुकरात की विवादात्मक पद्धति से प्रेरित थी तो आधुनिक युग में देकार्त ने भी सुकरात की संदेहात्मक विधि से दर्शन हो समझा। इस प्रकार सुकरात का दार्शनिक प्रभाव भावी चिन्तन पर पड़ा जो ज्ञान के लिए लाभप्रद सिद्ध हुआ।

सुकरात का ज्ञान का सिद्धान्त :

सोफिस्टो के अनुसार ज्ञान सार्वभौम नहीं होता है अपितु व्यक्तिगत एवं विशेष होता है। सुकरात इस मत से असहमत थे। उनके अनुसार वस्तुनिष्ठ ज्ञान संभव है। उन्होंने इन्द्रियानुभव को नकारा नहीं अपतिु उसका प्रत्यक्ष सार्वभौम ज्ञान की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान माना है। तर्क और परिभाषा का भी ज्ञान प्राप्ति में महत्वपूर्ण स्थान है। तर्क से उनका तात्पर्य बुद्धि से है। बुद्धि द्वारा व्यक्ति निष्कर्ष निकाल सकता है।

सुकरात के अनुसार ज्ञान और सदगुण में भी घनिष्ट सम्बंध है। मानव जीवन का परम उद्देश्य सदगुणी होना है। अज्ञान मानव को अनुचित कार्यों की ओर ले जाता है। यदि मनुष्य को उचित कार्य करेगा। ज्ञान को सुकरात ने सर्वोत्तम गुण माना है। (Knowledge is virtue) जब तक व्यक्ति को ज्ञान ही नहीं कि सदगुण क्या होता है, तब तक वह सदगुणी हो ही नहीं सकता। सुकरात ने कहा था– 'ठीक करने के लिए सोचना जरूरी है। यदि व्यक्ति आत्मसंयमी, साहसी, न्यायी और दयावान बनना चाहता है। तो उसे आत्मसंयम, साहस, न्याय, और दया की सही जानकारी होना आवश्यक है। सुकरात ने कोरे उपदेश ही नहीं दिए अपितु लोगों को नैतिक एवं सदगुणी बनने की प्रेरणा भी दी।

सुकरात पर नास्तिकता एवं नवयुवको को पथभ्रष्ट करने का आरोप लगाया गया और विधिवत अभियोग चलाकर उन्हें मृत्युदंड दिया गया। सुकरात ने कानून में अटूट विश्वास दर्शाते हुए भाग जाने के अपेक्षा विषपान

करना स्वीकार किया। सुकरात ने स्वयं कोई ग्रन्थ नहीं लिखा। उनके समस्त विचारों का ज्ञान उनके शिष्य प्लेटों की रचनाओं में ही मिलता है। सुकरात के विचार, विचार पद्धति एवं विचार प्रक्रिया आज दो हजार वर्ष उपरांत भी उतने ही प्रासंगिक है जितने उनके समय में थे।

शैक्षिक निहितार्थ

बच्चों में गहन शोध की प्रक्रिया विकसित करने में सुकराती पद्धति सर्वथा उपयुक्त है। इस पद्धति में हम एक प्रश्न विचारार्थ प्रस्तुत करते है। सभी उपस्थित गण इस पर गहन चिन्तन या वाद होता है। परिणामस्वरूप मिले ऐसे कई नये और साहसी विचारों को सामने लाते है जिन्हें कोई अकेला व्यक्ति शायद ही सोच पाये।

यह प्रक्रिया एक अनुशासित प्रक्रिया है जिसमें प्रश्न एक अंतरात्मा की आवाज के रूप में कार्य करती है। और यह प्रक्रिया तभी विकसित होती है। जब बुद्धिस्वतंत्र एवं गहन रूप से सोचने में सक्षम हो।

सुकरात ने अपने शिष्यों को यह नहीं बताया कि क्या अच्छा, क्या सच, क्या बेहतर या क्या वांछनीय है अपितु उन्होंने शिष्यों के विचारों को दिशा दी जिसमें वे समझ सके कि क्या सही नहीं है।

शिक्षा के क्षेत्र में सुकराती पद्धति का छात्रों को स्वयं उत्तर ढूँढने में, वाद–विवाद में पारंगत करने में एक अनुशासित और व्यवस्थित बौद्धिक विचार प्रक्रिया विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान है। कक्षा में इस पद्धति का उपयोग यदि शिक्षक सुचारू रूप से करता है तो वो छात्रों में स्वतंत्र चिन्तन निष्पक्ष विचार गहन सोच तार्किकता एवं विश्लेषण क्षमता को चेतन व विकसित करता है तथा कक्षा को शिक्षक आधारित बनाता है। यह पद्धति किसी भी वर्ग, उम्र तथा विषय के लिए प्रयुक्त की जा सकती है। परन्तु शिक्षक का दायित्व है कि वह एक अनुशासित किन्तु स्वतंत्र विचारों को समान प्रधानता दे।

अत: सुकराती पद्धति को आज के बदलते परिवेश में उतनी ही सार्थक पाते है जितनी वह आज से ढाई हजार साल पहले थी।